One Year Certificate Course of Jain Scholar
(Online and Ofline)
Semester-I

Course Code CJS-101 : संस्कृत–I

- कालुकौमुदी–संज्ञा प्रकरण, स्वर संधि
- रचनानुवाद कौमुदी

Course Code CJS-102 : प्राकृत–I

- तुलसीमंजरी–प्राकृत सूत्र–1–30 एवं सूत्रों के द्वारा सिद्धि
- तुलसीमंजरी–प्राकृत सूत्र–31–60 एवं सूत्रों के द्वारा सिद्धि
- प्राकृत भाषा प्रबोधिनी–भाषा का परिचय, नियम, स्वर–व्यंजन, संज्ञा, सर्वनाम एवं संधि

Course Code CJS-103 : द्रव्य कर्म की अवधारणा

- द्रव्य की अवधारणा
- कर्म–सामान्य परिचय
- कर्मऔरजीव
- कर्म की दशअवस्थाएं
- अबाधाकाल और निषेक रचना

Course Code CJS-104 : कर्म प्रकृति एवं कर्मलब्धि

- पांचभाव
- कर्म की मूल एवं उत्तर प्रकृतियां
- 5 लब्धियाँ और करण
- बंधाधिकार और उदयाधिकार

Text Book

- डॉ. कपिल देवद्विवेदी, रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004.
- कालुकौमुदी
- तुलसीमंजरी
- आचार्य महाप्रज्ञ, कर्मवाद
- सागरमल जैन, जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास
- डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा, प्राकृत भाषा प्रबोधिनी
- साध्वी योगक्षेम प्रभा, द्रव्य की अवधारणा

One Year Certificate Course of Jain Scholar
(Online and Ofline)
Semester-II

Course Code CJS-201 :संस्कृत–II

- कालुकौमुदी–व्यञ्जन सन्धि
- विसर्ग सन्धि, कारक प्रकरण

Course Code CJS-202 :प्राकृत–II

- तुलसी मंजरी–प्राकृत सूत्र–61–120 और सूत्रों के द्वारा सिद्धि
- गद्य सोपान कारक विभक्ति

Course Code CJS-203 : ज्ञानमीमांसा एवं गुणस्थान

- जैनज्ञानमीमांसा
- 14 गुणस्थान
- 14 मार्गणास्थान

Course Code CJS-204 : जीवस्थान एवं कर्म प्रकृति

- बंधस्वामित्व व उदय स्वामित्व
- सत्ताधिकार व उदिरणाधिकार

Text Book

- कालुकौमुदी
- तुलसीमंजरी
- गद्यसोपान
- साध्वी श्रुतयशा, ज्ञानमीमांसा
- आचार्य महाप्रज्ञ, कर्मवाद